हिन्दू जनजागृति समिति समर्थित ग्रन्थ !

तीर्थक्षेत्रोंकी महिमा एवं दुःस्थिति : खण्ड १

तीर्थक्षेत्र एवं तीर्थयात्रा का महत्त्व

भूमिका

'तरति पापादिकं यस्मात्', अर्थात जो पापोंसे तारता है, उसे 'तीर्थ' कहते हैं । वास्तवमें तीर्थक्षेत्र केवल पापोंसे नहीं तारते, अपितु सभीसे अर्थात (भवसागरसे भी) तारते हैं । इसलिए उनके महत्त्वका वर्णन युगों-युगोंसे हो रहा है । तीर्थक्षेत्र मानवजातिका उद्धार करनेवाले परमस्थान हैं । इसीलिए हिन्दू धर्म और संस्कृति में तीर्थक्षेत्र एवं तीर्थयात्रा का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

तीर्थक्षेत्रकी पूर्वपीठिका सहस्रों वर्ष पुरानी है, इसलिए उनका चैतन्य शाश्वत और चिरन्तन रूपमें ही कार्यरत रहता है । तीर्थक्षेत्रोंमें सम्बन्धित देवताका वास होता है । इसलिए वहां चैतन्य अधिक रहता है । वहां उपासना करनेपर भक्तोंकी सब कामनाएं अल्प समयमें पूर्ण होती हैं । तीर्थक्षेत्रमें देवताके अस्तित्व और चैतन्य से मानवको लाभ हो और उसमें सत्त्वगुण बढे, इसीलिए ईश्वरने तीर्थक्षेत्र बनाए हैं ।

तीर्थक्षेत्र समस्त मानवजातिको ईश्वरीय ऊर्जा, चैतन्य, आनंद और शान्ति प्रदान करनेवाले तथा भक्तिभाव बढानेवाले आध्यात्मिक केन्द्र ही हैं । मानवकी पारमार्थिक उन्नति हेतु सहायक वातावरण सरलतासे उपलब्ध करानेवाले इन तीर्थक्षेत्रोंमें ईश्वरका नित्य और निरन्तर ध्यान-स्मरण किया जा सकता है । इसलिए तीर्थक्षेत्र केवल पर्यटनके क्षेत्र नहीं, अपितु समस्त मानवजातिके लिए अतिवन्दनीय और पवित्र क्षेत्र भी हैं । इसीलिए इस ग्रन्थमें तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व विशद किया गया है । तीर्थक्षेत्रोंका निर्माण, उनका महत्त्व, विशेषताएं आदि विषयोंका विवेचन किया गया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थमें विविध उदाहरण देकर तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें सन्तोंका महत्त्व भी समझाया गया है ।

तीर्थक्षेत्रगमन भी एक प्रकारकी 'साधना' है । इसके लिए तीर्थक्षेत्रमें जानेपर भावपूर्ण तीर्थस्नान करना, देवताओंके दर्शन करना, दान-धर्म करना, उपास्यदेवताका नामजप करना आदि विविध प्रकारसे अधिकाधिक समय ईश्वरके स्मरणमें रहना अपेक्षित है । ऐसा करनेपर ही तीर्थयात्राका आध्यात्मिक स्तरपर लाभ होता है । इसके अतिरिक्त, 'और क्या करनेपर तीर्थक्षेत्रोंसे अधिकाधिक लाभ मिलेगा', यह आपको इस ग्रन्थसे सीखनेके लिए मिलेगा । इसके साथ ही तीर्थयात्राका महत्त्व, तीर्थयात्रा करनेके लाभ, तीर्थयात्राका वास्तविक उद्देश्य साध्य होनेके लिए क्या करें आदि बातोंकी जानकारी इस ग्रन्थमें मिलेगी ।

यह ग्रन्थ पढनेसे तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व सबको ज्ञात हो, इस धरापर स्थित तीर्थक्षेत्ररूपी श्रेष्ठ स्थानोंकी अनुभूति होनेके लिए सबमें साधना करनेकी प्रबल इच्छा जाग्रत हो और तीर्थक्षेत्रोंसे वास्तविक लाभ हो, जिससे सबमें भक्तिभाव बढे, यह ईश्वरसे प्रार्थना ! - **संकलनकर्ता**

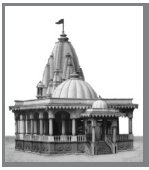

अध्याय १

तीर्थक्षेत्रोंकी सामान्य जानकारी

अनुक्रमणिका

१. **तीर्थ** १७

१ अ. 'तीर्थ' शब्दकी व्युत्पत्ति और अर्थ १७

२. **तीर्थक्षेत्र** १८

२ अ. 'तीर्थक्षेत्र' शब्दकी व्युत्पत्ति और अर्थ १८

२ आ. तीर्थक्षेत्रोंका स्थान १९

२ इ. तीर्थक्षेत्रोंका इतिहास १९

२ ई. तीर्थक्षेत्र-सम्बन्धी वाङ्मय १९

२ उ. तीर्थक्षेत्रोंके प्रकार १९

* देव, असुर, ऋषि और मानव से सम्बन्धित १९

* पांच महातत्त्वोंके देवस्थान * चारधाम २०

* मोक्षदायिनी सप्तपुरियां और कुछ पवित्र स्थान २१

* त्रिस्थली यात्रा २२

* हथेलीपर स्थित तीर्थ (क्षेत्र) २४

* मुण्डनसंस्कारके लिए वर्जित तीर्थक्षेत्र ! २५

२ ऊ. अन्य तीर्थक्षेत्र २५

२ ए. तीर्थक्षेत्रोंका चैतन्य बने रहनेके कारण और अवधि २७

२ ऐ. गुरु और तीर्थक्षेत्र २ ओ. साधना २८

३. जन्मपत्रीकी ग्रहदशाके अनुसार व्यक्तिको तीर्थप्राप्ति होना ३५

४. श्मशान, चिकित्सालय, घर, मन्दिर (आजकलके), तीर्थक्षेत्र (आजकी स्थिति) और सन्तोंके आश्रम में त्रिगुणोंकी मात्रा ३५

५. विविध सात्त्विक स्थान, उनसे साधनामें सम्भावित लाभ, सम्बन्धित कार्य, कार्यरत शक्ति व सम्बन्धित योगमार्ग ३६

६. विविध पुण्यक्षेत्रोंकी विशेषताएं, प्रमुख कार्य, कार्यरत शक्ति और प्रमुख योगमार्ग ३९

७. तीर्थक्षेत्रोंके प्रकार, कुछ उदाहरण और विशेषताएं ४३

८. तीर्थक्षेत्रोंके प्रकार, सम्बन्धित कार्य, कार्यरत प्रमुख शक्ति और सम्बन्धित योगमार्ग ४६

९. अन्य पन्थियोंके तीर्थक्षेत्र और हिन्दुओंके तीर्थक्षेत्र ४७

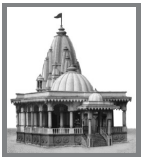

अध्याय २
तीर्थक्षेत्रोंका निर्माण

* तीर्थक्षेत्र कैसे बनते हैं ?
* सन्त, गुरु, सद्गुरु की निष्काम साधनासे उनके निवास-स्थानका वातावरण शुद्ध होकर वह तीर्थक्षेत्र बनना
* पुण्यवान व्यक्ति एवं सन्तोंके समाधिस्थान
* धर्मकार्य करनेवाली समाजव्यवस्था ही तीर्थक्षेत्र बनना

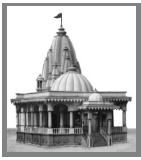

अध्याय ३
तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व

अनुक्रमणिका

१. चैतन्य ५३

२. पापमुक्ति ५४

३. चित्तशुद्धि ५४

४. सत्संग ५४

५. साधनाके सन्दर्भमें महत्त्व ५४

६. तीर्थक्षेत्रमें मृत्योत्तर यात्रा शुभ और सुगम होना ५६

७. भूतकालके जीवोंकी लिंगदेहोंसे पुनः सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए तीर्थक्षेत्रोंका उपयोग होना ५६

८. **तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें भारतका महत्त्व** ५६

८ अ. भारतके सभी तीर्थक्षेत्र एक ही समयपर और निरन्तर जागृत रहना ५६

८ आ. भारतकी एकात्मकताकी भावना बनी रहना ५७

८ इ. हिन्दुओंको एकात्मकताकी डोरसे बांधनेवाले तीर्थक्षेत्र ५७

८ ई. मानस सरोवर और कैलास सरोवर इन तीर्थक्षेत्रोंसे युक्त भूभाग भारतका अभिन्न घटक है, ऐसा शंकराचार्यजीका कहना ५७

८ उ. विदेशमें भारतके तीर्थक्षेत्रसमान स्थान ही नहीं ! ५७

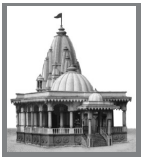

अध्याय ४

तीर्थक्षेत्रोंकी विशेषताएं

अनुक्रमणिका

१. **तीर्थक्षेत्रकी मिट्टीमें अनिष्ट शक्तियोंको नष्ट करनेकी क्षमता होना** ६०

२. **पुण्य** ६०

३. **पाप** ६०

३ अ. अन्य क्षेत्रमें किए दुष्कर्मकी तुलनामें तीर्थक्षेत्रमें किए दुष्कर्मसे अनेक गुना पाप लगना ६०

३ आ. तीर्थक्षेत्रमें किया पाप वज्रलेप होना ६०

४. **सिद्धिका प्रयोग कर तीर्थक्षेत्रकी तरंगें खींचनेसे उनकी मात्रा घट सकना** ६१

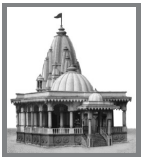

अध्याय ५
तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें सन्तोंका महत्त्व

अनुक्रमणिका

१. सन्त एवं तीर्थक्षेत्र ६३

२. ज्योतिर्लिंग और सन्तोंके समाधिस्थलका महत्त्व ६४

३. तीर्थक्षेत्रमें आनेके लिए सन्तोंका देवतासे अनुमति मांगना ६४

४. सन्तोंकी और अन्योंकी तीर्थयात्रा ६४

५. साधु-सन्तोंके कारण तीर्थक्षेत्रोंकी पवित्रता बनी रहना ६४

६. तीर्थक्षेत्रमें सन्तोंके विशेष कार्यक्रम ६५

७. सन्तोंका तीर्थयात्रा करनेका उद्देश्य ६५

८. अवतारी सिद्धपुरुषोंका तीर्थक्षेत्रको जागृत रखना ६६

९. कुम्भमेलेमें खरे सन्तोंके गंगास्नानसे गंगाका शुद्धीकरण ! ६६

१०. सन्त और गुरु तीर्थक्षेत्रोंसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण ६७

११. तीर्थक्षेत्रके सन्दर्भमें सन्तोंकी सीख ६७

१२. तीर्थक्षेत्रमें स्नान, सन्तदर्शन और सद्गुरुप्राप्ति ६८

१३. सात्त्विक स्थानों और सन्तों की प्रभावके सन्दर्भमें अनुकूलता और पूरकता ६८

१४. तीर्थक्षेत्रोंकी पवित्रता बनाए रखनेका महत्त्व ६९

गंगाजीकी रक्षा हेतु सक्रिय बनने हेतु पढें सनातनका ग्रन्थ

देवनदी गंगाकी रक्षा करें !

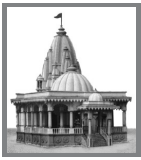

अध्याय ६
तीर्थयात्रा

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. व्युत्पत्ति और अर्थ ७२

२. तीर्थयात्राका महत्त्व ७२

३. तीर्थयात्राकी विशेषताएं ७४

४. तीर्थक्षेत्र जाते समय रहनेवाली मनोवृत्ति ७५

५. तीर्थयात्राके लाभ ७६

* मानसिक लाभ ७६

* पाप-पुण्यके विषयमें ७८

* तीर्थयात्राका फल किसे मिलता है ? ८०

६. तीर्थयात्राओंके प्रकार ८१

७. यात्रा विधान (पद्धति) ८२

८. यात्राका वास्तविक उद्देश्य साध्य करनेके लिए क्या करें ? ८४

९. तीर्थयात्रा किसके लिए अनावश्यक है ? ८६

१०. तीर्थयात्रा और विविध सन्तोंके दर्शन हेतु जानेकी मर्यादा ८६

११. तीर्थक्षेत्रमें स्नान तथा शरीर, मन, आत्मा और बुद्धिको शुद्ध करनेके अन्य मार्ग ८७

१२. तीर्थयात्राके विषयमें तीर्थयात्रियोंका अपूर्व श्रद्धाभाव ! ८७

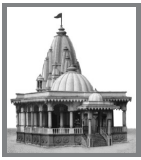

अध्याय ७

तीर्थयात्रासे अधिक महत्त्वपूर्ण है साधना !

अनुक्रमणिका

१. अन्तर्मुखताका महत्त्व ८९

२. तीर्थयात्राकी मर्यादा तथा नामसाधनाकी अनिवार्यता ९०

३. गंगास्नानसे अधिक शुद्धि साधनासे होना ९०

४. तीर्थक्षेत्रोंमें जाकर देवदर्शन करनेकी अपेक्षा गुरुसे मिलनेपर अधिक आनन्द दीर्घकाल होना ९२

५. देहरूपी मन्दिरको तीर्थ बनाना अर्थात साधना करना ही सभीका प्रथम कर्तव्य है ९२

६. मनके सारे विकार और नकारात्मकता नष्ट कर, निर्मल अन्त:करणसे तीर्थक्षेत्रमें जाना आवश्यक ! ९२

७. तीर्थक्षेत्रकी अनुभूति होनेके लिए साधना अत्यावश्यक ! ९३

'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु पथदर्शक ग्रन्थमालाका तृतीय ग्रन्थ !

हिन्दू धर्मपर हो रहे आक्रमणोंपर उपाय

- देश-धर्म के मूलपर प्रहार करनेवाला 'लव जिहाद' !
- हिन्दुओंके धर्मान्तरणकी समस्या एवं समाधान !
- 'मन्दिर सरकारीकरण कानून'के सम्बन्धमें धर्मद्वेष !
- हिन्दुओंके मन्दिरोंको संगठनस्रोत बनाना आवश्यक !
- गोवंशकी असुरक्षितता एवं उसकी रक्षाका मार्ग !